SYLLABUS

B.Com. I YEAR

Subject – Hindi

UNIT – I	मैथिलीशरण गुप्त परिचय पाठः मातृभूमि (कविता)
	प्रेमचन्दः परिचय पाठः शतरज के खिलाड़ी (कहानी)
	व्यग्यः शरद जोशी जीप पर सवार इल्लियों नियत कार्य - लेखक प्रेमचन्द की शैली के अनुसार वास्तविकता के आधार पर कोई कहानी लिखिए।
UNIT – II	पर्यायवाची शब्द, विलोम शब्द अनेक शब्द के लिए एक शब्द (हिन्दी व्याकरण)
	संधि और उसके प्रकार (हिन्दी व्याकरण) नियत कार्य - हिन्दी अखबारकी सहायता से हिन्दी की शब्द संपदाकी खोजकर 15 नए शब्द लिखिए।
	बीज शब्द- धर्म, अद्वैत, भाषा, अवधारणा, उदारीकरण ।
UNIT – III	वैचारिक भारतीय भाषाओं में राम
	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल परिचय पाठः उत्साह (भावमूलक निबन्ध)
	रामधारी सिंह दिनकर परिचय पाठः भारत एक है (संस्कृति)
	आदिशंकराचार्य-जीवन व दर्शन नियत कार्य - यात्रा संस्मरण का आशय बताते हुए अपने जीवन से जुडी किसी यात्रा संस्मरण का वर्णन कीजिए।

गतिविधि - 1 राजभाषा हिन्दी से जुडे विषयों पर प्रश्नोत्तरी का आयोजन।

गतिविधि - 2 हिन्दी शब्दों की शुद्ध-अशुद्ध वर्तनी से जुडी गतिविधि।

renaissance

शब्द भंडार किसे कहते हैं

हिंदी साहित्य या हिंदी भाषा में शब्दों का ऐसा समूह जिसमें पर्यायवाची, विलोम, एकार्थी, अनेकार्थी, समरूपी भिन्नार्थक और अनेक शब्दों के लिए एक शब्द जैसे शब्दों को एक जगह इकट्ठा करके रखना ही शब्द भंडार है।

शब्द भंडार के प्रकार

1. पर्यायवाची शब्द
2. विलोम शब्द
3. एकार्थी शब्द
4. अनेकार्थी शब्द
5. समरूपी भिन्नार्थक शब्द
6. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द आदि।

1. पर्यायवाची शब्द किसे कहते हैं

पर्यायवाची शब्द की परिभाषा - वे शब्द जो लगभग एक समान अर्थ प्रकट करते हैं, उन्हें पर्यायवाची या समानार्थी शब्द कहते हैं। सरल भाषा में कहें तो समान अर्थ वाले शब्दों को ही पर्यायवाची शब्द कहते हैं।

मैंने यहां कुछ शब्द दिए हैं जो की आपके लिए महत्वपूर्ण हो सकते हैं -

पर्यायवाची शब्द

1. अश्व - घोड़ा, तुरंग, घोटक, हय
2. अहंकार - घमंड, अहं, गर्व, अभिमान
3. असुर - दानव, दनुज, राक्षस
4. अध्यापक - शिक्षक, आचार्य, गुरु
5. अतिथि - मेहमान, पाहून, अभ्यागत, आगंतुक
6. अमृत - सुधा, पीयूष, अमिय, अमी

7. तालाब - सरोवर, तड़ाग, सर, ताल
8. तट - कूल, किनारा, कगार
9. दशा - अवस्था, स्थिति, हालत, परिस्थिति
10. इन्द्र - सुरपति, देवराज, देवेंद्र, पुरंदर, शचीपति
11. दास - सेवक, भृत्य, नौकर, अनुचर
12. दूध - दुग्ध, क्षीर, पय, गोरस
13. उपवन - बाग़, बगीचा, उद्यान, वाटिका, फुलवारी
14. ऋषि - मुनि, साधू, संत, महात्मा
15. कमल - पंकज, अरविन्द, पदम्, नीरज, जलज
16. पत्नी - भार्या, गृहणी, वधू, दारा
17. किरण - रश्मि, अंशु, कर, मरीचि
18. पर्वत - गिरी, पहाड़, अचल, नग, शैल
19. पेड़ - वृक्ष, विटप, पादप, महीतरु
20. चाँदनी - चंद्रिका, कौमुदी, ज्योत्स्ना
21. चतुर - कुशल, दक्ष, निपुण, प्रवीण, पटु
22. अरण्य - जंगल, वन, कानन, विपिन
23. आँख - नयन, नेत्र, लोचन, चक्षु, दृग
24. आकाश - आसमान, नभ, गगन, व्योम, अंबर
25. दुःख - पीड़ा, व्यथा, क्लेश, संताप
26. देव - देवता, सुर, अमर, विबुध
27. उद्देश्य - लक्ष्य, प्रयोजन, ध्येय, मकसद, इरादा
28. धनुष - धनु, चाप, कमान
29. उन्नती - विकास, उत्थान, तरक्की, प्रगति
30. परमात्मा - प्रभु, ईश्वर, भगवान, ईश
31. कामदेव - मनोज, मदन, काम, अनंग
32. कार्य - काम, कृत्य, कर्म, काज
33. पथिक - राही, पंथी, मुसाफिर, बटोही
34. कोकिल - कोयल, पिक, परभृत

35. फूल - कुसुम, सुमन, प्रसून, पुष्प
36. चंद्र - चन्द्रमा, शशि, हिमांशु, राकेश, शशांक
37. भौंरा - भ्रमर, अलि, भँवरा, षट्पद, भृंग
38. सूर्य - सूरज, दिनकर, आदित्य, रवि, भानु

विलोम शब्द की परिभाषा - वे शब्द जो एक दुसरे का विपरीत अर्थ प्रकट करते हैं, उन्हें विलोम शब्द कहते हैं। विलोम शब्द को विपरीतार्थी शब्द भी कहते हैं।

विलोम शब्द हिन्दी

1. अंदर - बाहर
2. अंधकार - प्रकाश
3. आगमन - प्रस्थान
4. अंतरंग - बहिरंग
5. अंतर्मुखी - बहिर्मुखी
6. अतिवृष्टि - अनावृष्टि
7. अनुकूल - प्रतिकूल
8. इहलोक - परलोक
9. कटु - मधुर
10. निरक्षर - साक्षर
11. अनुज - अग्रज
12. कोमल - कठोर
13. उत्तीर्ण - अनुत्तीर्ण
14. उत्थान - पतन
15. उष्ण - शीत
16. उदार - अनुदार
17. उपकार - अपकार
18. उपस्थित - अनुपस्थित
19. एकता - अनेकता

20. तरुण - वृध्द
21. निंदा - प्रशंसा
22. अनुराग - विराग
23. कृत्रृम - स्वाभाविक
24. मौखिक - लिखित
25. दुर्बल - सबल
26. सर्वज्ञ - अल्पज्ञ
27. आस्तिक - नास्तिक
28. दीर्घ - लघु
29. आसक्ति - विसक्ति
30. दुर्लभ - सुलभ
31. नश्वर - शाश्वत
32. कुकर्म - सुकर्म
33. अनिवार्य - ऐच्छिक
34. कृतज्ञ - कृतघ्न
35. परमार्थ - स्वार्थ
36. अपराधी - निरपराधी
37. अग्र - पश्च
38. मित्र - शत्रु
39. अभिज्ञ - अनभिज्ञ
40. विकारी - अविकारी
41. संयोग - वियोग
42. सफलता - विफलता
43. चल - अचल
44. अनाथ - सनाथ
45. कुटिल - सरल
46. पराधीन - स्वाधीन
47. अपमान - सम्मान

48. कीर्ति - अपकीर्ति

अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

परिभाषा - वे शब्द जो अनेक शब्दों के स्थान पर अकेले ही प्रयोग किए जाते हैं, उन्हें अनेक शब्दों के लिए एक शब्द कहते हैं।

अनेक शब्दों के लिए एक शब्द उदाहरण -

1. जिस बात को कहा न जा सके - अकथनीय
2. जिसे टाला नहीं जा सकता - अनिवार्य
3. जो किसी के पीछे चलता हो - अनुयायी
4. जहां जाया न जा सके - अगम्य
5. अनेक राष्ट्रों से संबंधित - अंतर्राष्ट्रीय
6. जिसे जीता न जा सके - अजेय
7. जो क्षमा न किया जा सके - अक्षम्य
8. जो थोड़ा जानता हो - अल्पज्ञ
9. बिना वेतन के काम करने वाला - अवैतनिक
10. जिसे देखा न जा सके - अदृश्य, परोक्ष
11. जो कभी न मरे - अमर
12. अत्याचार करने वाला - अत्याचारी
13. जिसका विवाह हो गया हो - विवाहित
14. जो कभी बूढा न हो - अजर
15. जिसे पाना सरल हो - सुलभ
16. जहां - जंगली पशु स्वतंत्रतापूर्वक रहते हों - अभ्यारण
17. आकाश को चुमने वाला - गगनचुम्बी
18. जिसकी आयु छोटी हो - अल्पायु
19. जिसे पढ़ा न हो - अपठित
20. जिसकी कल्पना न की जा सके - अकाल्पनिक
21. अंदर की बात जान्ने वाला - अन्तर्यामी

22. जो किसी के अधीन न हो - स्वतंत्र
23. जो धर्म का कार्य करे - धर्मात्मा
24. इन्द्रियों को जीतने वाला - जितेन्द्रिय
25. जहां अनाथ रहते हों - अनाथालय
26. अच्छे भाग्य वाला - सौभाग्यशाली
27. प्रत्येक मास होने वाला - मासिक
28. मांस न खाने वाला - शाकाहारी
29. दूर की सोचने वाला - दूरदर्शी
30. सौ वर्षों का समूह - शताब्दी
31. जो आँखों के सामने हो - प्रत्यक्ष
32. सुनने वाला - श्रोता
33. जो पढ़ा-लिखा न हो - अनपढ़
34. जिसकी आत्मा धर्म में लीन हो - धर्मात्मा
35. जिसके मुंह से आग निकलती हो - ज्वालामुखी
36. श्रम द्वारा जीवन यापन करने वाला - श्रमजीवी
37. जो शिव का उपासक हो - शैव
38. जो अपने पर अवलम्बित हो - स्वावलम्बी
39. उपकार को मानने वाला - कृतज्ञ
40. दूसरे देश का - विदेशी
41. जिसमें विकार न हो - निर्विकार
42. जो कार्य करने में कठिन हो - दुष्कर
43. जो पढ़ा लिखा हो - साक्षर
44. जो क्षण मात्र का हो - क्षणिक
45. जो गिना न जा सके - अगणित
46. जो अभी-अभी पैदा हुआ हो - नवजात
47. जिसके मन में ममता न हो - निर्मम
48. जो सच बोलता हो - सत्यवादी
49. जो अच्छे कुल में पैदा हो - कुलीन

50. पृथ्वी पर रहने वाला - थलचर

शतरंज के खिलाड़ी

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। अकेले रहना, समूह में रहना और समाज बनाकर रहना– हमारी दुनिया में ये ही तीन स्थितियाँ हैं। इन स्थितियों में से तीसरी यानी समाज बनाकर रहने की स्थिति सिर्फ मनुष्य की है, इसीलिए उसे सभी प्राणियों में श्रेष्ठतम प्राणी होने का गौरव प्राप्त है। मनुष्य को देश और समाज से अनेक रूपों में बहुत कुछ मिलता है, इसलिए उसका भी यह कर्त्तव्य है कि वह तन, मन और ध्न सभी तरीकों से इस से मुक्त होने का प्रयास करे। लेकिन बहुत से मनुष्य अपने इस कर्तव्य का पालन करने में रुचि नहीं दिखाते और अपना पेट भरने, अपने शौक पूरे करने और अपनी सुख–सुविधाओं का आनंद लेने में लगे रहते हैं। जब किसी देश की शासन–व्यवस्था से जुड़े लोग ऐसा करते हैं तो यह बीमारी जनता तक भी पहुँच जाती है और देश बरबाद या पराधीन हो जाता है। ऐसे ही विषय पर हमें सोचने को मजबूर करती है यह कहानी– 'शतरंज के खिलाड़ी'।

कहानी को मुख्यतः कथावस्तु, पात्र और चरित्र–चित्रण, संवाद, भाषा–शैली और परिवेश के आधर पर समझा जाता है।

1 कथावस्तु

कहानी की शुरुआत एक भूमिका से होती है और इस भूमिका के बाद कहानी के मुख्य पात्र मीर और मिरज़ा हमारे सामने आते हैं। दरअसल, यह भूमिका इस कहानी की मूल कथावस्तु को समझने के लिए बहुत आवश्यक है। यहाँ कहानीकार पराधीन भारत के एक प्रमुख सत्ता–केंद्र लखनऊ के सामाजिक–राजनीतिक वातावरण की चर्चा करता है। इस चर्चा में वह शासक–वर्ग से लेकर आम जनता तक को विलासिता में डूबा दिखाता है। छोटे–बड़े सभी नाच–गाने, पहनने–ओने की आदत पड़ती है। लेखक ने नागरिकों की इस मनःस्थिति का चित्रण करते हुए अपने युग में भी विद्यमान इस प्रवृत्ति पर टिप्पणी करते हुए कहा है कि इस संप्रदाय के लोगों से दुनिया खाली नहीं है। यही नहीं वह आगे कई बार अपनी यह टिप्पणी भी रखता है– ''यह राजनीतिक पतन की चरम सीमा थी।''

प्रेमचंद यह बताना चाहते हैं कि जिस देश का ज़िम्मेदार वर्ग लापरवाह होकर भोग–विलास में डूबा जाता है, उस देश को गुलाम होने से कोई नहीं बचा सकता।

इस कहानी में प्रेमचंद ने वाजिदअली शाह के वक्त के लखनऊ को चित्रित किया है। भोग-विलास में डूबा हुआ यह शहर राजनीतिक-सामाजिक चेतना से शून्य है। पूरा समाज इस भोग-लिप्सा में शामिल है। इस कहानी के प्रमुख पात्र हैं - मिरज़ा सज्जाद अली और मीर रौशन अली। दोनों

वाजिदअली शाह के जागीरदार हैं। जीवन की बुनियादी ज़रूरतों के लिए उन्हें कोई चिन्ता नहीं है। दोनों गहरे मित्र हैं और शतरंज खेलना उनका मुख्य कारोबार है। दोनों की बेगमें हैं नौकर.चाकर हैं समय से नाश्ता.खानाए पान.तम्बाकू आदि उपलब्ध होता रहता है।

एक दिन की घटना है. मिरजा सज्जाद अली की बीवी बीमार हो जाती हैं। वह बार.बार नौकर को भेजती हैं कि मिरज़ा हकीम के यहाँ से कोई दवा लायें किंतु मिरज़ा तो शतरंज में डूबे हुए हैं। हर घड़ी उन्हें लगता है कि बस अगली बाजी उनकी है। अंत में तंग आकर मिरज़ा की बेगम उन दोनों को खरी.खोटी सुनाती हैं। खेल का सारा ताम.झाम ड्योढी के बाहर फैंक देती है। नतीजा यह निकलता है कि शतरंज की बाजी अब मिरज़ा के यहाँ से उठकर मीर के दरवाजे जा बैठती है।

मीर साहब की बीवी शुरू में तो कुछ नहीं कहतीं लेकिन जब बात हद से आगे बढ़ने लगती है तब इन दोनों खिलाड़ियों को मात देने के लिए वह एक नायाब तरकीब निकालती है। जैसा कि हमेशा होता थाए दोनों मित्र शतरंज की बाजियों में खोये हुए थे कि उसी समय बादशाही फौज का एक अफ़सर मीर साहब का नाम पूछता हुआ आ खड़ा होता है। उसे देखते ही मीर साहब के होश उड़ गये। वह शाही अफ़सर मीर साहब के नौकरों पर खूब रोब ग़ालिब करता है और मीर के न होने की बात सुनकर अगले दिन आने की बात करता है। इस प्रकार यह तमाशा खत्म होता है। दोनों मित्र चिन्तित हैंए इसका क्या समाधान निकाला जाय।

मीर और मिरज़ा भी छोटे खिलाड़ी नहीं थे। उन्होंने भी गज़ब की तोड़ निकाली। दोनों मित्रों ने एक बार पुनः स्थान.परिवर्तन करके ही अपना अगला पड़ाव माना। न होंगे न मुलाकात होगी। इधर बेगम आज़ाद हुई उधर मीर बेपरवाह। नया स्थान था शहर से दूर गोमती के किनारे एक विरान मस्ज़िद। वहाँ लोगों का आना.जाना बिल्कुल नहीं था। साथ में जरूरी सामान जैसे हुक्का चिलम दरी आदि ले लिये। कुछ दिनों ऐसा ही चलता रहा। एक दिन अचानक मीर साहब ने देखा कि अंग्रेजी फौज गोमती के किनारे.किनारे चली आ रही है। उन्होंने मिरज़ा से हड़बड़ी में यह बात बताई। मिरज़ा ने कहा . तुम अपनी चाल बचाओ। अंग्रेज आ रहे हैं आने दो। मीर ने कहा साथ में तोपखाना भी है। मिरज़ा साहब ने कहा. यह चकमा किसी और को देना। इस प्रकार पुनः दोनों खेल में गुम हो गए।

कुछ समय में नवाब वाजिद अली शाह कैद कर लिए गए। उसी रास्ते अंग्रेजी सेना विजयी भाव से लौट रही थी। पूरा शहर बेशर्मी के साथ तमाशा देख रहा था। अवध का इतना बड़ा नवाब चुपचाप सर झुकाए चला जा रहा था। मीर और रौशन दोनों इस नवाब के जागीरदार थे। नवाब की रक्षा में इन्हें अपनी जान की बाजी लगा देनी चाहिए। परंतु दुर्भाग्य कि जान की बाजी तो इन्होंने लगाई ज़रूर पर शतरंज की बाजी पर। थोड़ी ही देर बाद खेल की बाजी में ये दोनों मित्र उलझ पड़े। बात खानदान और रईसी तक आ पहुँची। गाली-गलौज होने लगी। दोनों कटार और तलवार रखते थे। दोनों ने तलवारें निकालीं और एक दूसरे को दे मारीं। दोनों का अंत हो गया। काश! यह मौत नवाब वाजिदअली के पक्ष में और ब्रिटिश सेना के प्रतिपक्ष में हुई होती! लेकिन ऐसा हुआ नहीं।

2 पात्र और चरित्र–चित्रण

कहानी के मुख्य पात्र हैं– मिरज़ा साहब और मीर साहब। इन दोनों के व्यक्तित्व में अनेक समानताएँ हैं, क्योंकि ये एक ही वर्ग के हैं। प्रेमचंद ने इन दोनों की समान प्रवृत्तियों के आधर पर तत्कालीन वातावरण को भी चित्रित करने का प्रयास किया है। वातावरण में जो विलासिता फैली थी, उससे ये भी ग्रस्त थे। इनके अतिरिक्त कहानी के अन्य पात्रा हैं मिरज़ा साहब की बेगम, बादशाही सवार और नौकरानी हरिया आदि। सबसे पहले हम मिरज़ा साहब के व्यक्तित्व की विशेषताओं को समझते हैं। मिरज़ा साहब का पूरा नाम मिरज़ा सज्जाद अली था। वे लखनउ के नवाब वाजिदअली शाह के एक जागीरदार थे। उन्हें अपनी जीविका चलाने की कोई चिंता नहीं थी, क्योंकि उनके पास पैतृक संपत्ति थी। उन्हें शतरंज खेलने का बेहद शौक था या कहें कि बुरी लत थी। वे बेहद आलसी और कामचोर इंसान थे। उनकी शतरंज खेलने की आदत के बारे में उनके आस–पास के लोग नौकर और चाकर भी अच्छी राय नहीं रखते तथा उनकी बुराई करते रहते हैं। मिरज़ा साहब शतरंज के खेल में इतने डूब जाते कि घर की चिंता करना भी छोड़ देते। इसलिए उनकी बेगम भी उनसे परेशान रहती थी और हमेशा मिरज़ा साहब को लताड़ती रहती थी। वे यह बताना चाहते हैं कि जिस देश का जिम्मेदार वर्ग लापरवाह होकर विलास में डूब जाता है, उस देश को गुलाम होने से कोई नहीं बचा सकता।

मीर साहब का पूरा नाम मीर रौशन अली है। इनके पास भी मिरज़ा साहब की तरह पैतृक जागीरदारी है। इन्हें भी अपनी जीविका चलाने की कोई चिंता नहीं। हमेशा शतरंज खेलना तथा पान, हुक्का, चिलम जैसे मादक पदार्थों का सेवन करना इनकी आदत है। इनकी इस आदत ने इनके स्वाभिमान को नष्ट कर दिया है। मिरज़ा साहब की पत्नी इनसे बेहद नपफरत करती हैं पिफर भी ये मिरज़ा साहब वे घर जाना नहीं छोड़ा। मीर साहब को मिरज़ा की बेगम का बोलना बुरा लगता है, इसलिए वे मिरज़ा साहब को बेगम के सामने तनकर रहने की नसीहत दते हैं। मीर साहब बहुत डरपोक और कायर इंसान हैं। मिरज़ा की बेगम के गुस्से के डर से वे भाग जाते हैं। एक बार जब बादशाही पफौज का अफसर इनका नाम पूछता हुआ आता है तो इनके होश उड़ जाते हैं। भागने में ही ये अपनी भलाई

समझते हैं। घर के दरवाज़े बंद करके नौकर को बोलते हैं कि उन्हें कह दो कि घर में नहीं हैं। अर्थात झूठ बोलना इन्हें भी आता है। शतरंज खेलने में बेईमानी भी करते हैं। यही बेईमानी और झूठी अकड़ मिरज़ा की तरह उनकी भी मृत्यु का कारण बनती

3 संवाद–योजना

प्रेमचंद ने संवादों का उपयोग आवश्यकतानुसार किया है। जब वे पात्राों की चारित्रिक विशेषताएँ बताना चाहते हैं, तो बीच–बीच में संवादों का भी सहारा लेते हैं, उदाहरण के लिए एक स्थान पर जब बेगम साहिबा कहती हैं कि– ''क्या पान माँगें हैं? कह दो, आकर ले जाएँ। खाने की फुरसत नहीं है, ले जाकर खाना सिर पर पटक दो, खाएँ चाहें कुत्ते को खिलाएँ।'' इस संवाद से बेगम साहिबा की मनःस्थिति का बोध होता है जिसमें क्रोध और झल्लाहट है।

एक अन्य स्थान पर मिरज़ा साहब कहते हैं– ''ख़ुदा के लिए, तुम्हें हज़रत हुसैन की कसम है। मेरी मैयत ही देखे, जो उध्र जाए।'' यह संवाद मिरज़ा साहब के अपमानित होने के डर को व्यक्त करता है।

मीर साहब बेगम साहिबा के प्रति कैसा सोच रखते हैं। मीर साहब का कथन– ''बड़ी गुस्सेवर मालूम होती हैं। मगर आपने उन्हें यों सिर च

मिरज़ा–खुदा की कसम, आप बड़े बेदर्द हैं। इतना बड़ा हादसा देखकर भी आपको दुख नहीं होता। हाय, गरीब वाजिद अली शाह। यहाँ मिरजा का कहना 'हाय, गरीब वाजिदअली शाह' एक गहरे व्यंग्य को प्रकट करता है। उनकी चापलूसी और झूठी सहानुभूति इसी एक वाक्य से प्रकट हो जाती है।

इस कहानी में जहाँ भी संवादों का प्रयोग हुआ है, वहाँ अध्कि शब्द उर्दू अथवा पफारसी शैली के हैं। इनसे कहानी में जीवंतता आ गई है तथा तत्कालीन लखनउफ के सामंती जीवन शैली तथा उनकी भाषा का बोध होता है। इन संवादों से हमें पात्राों की मनः स्थिति एवं उनके उद्देश्यों का सरलता से पता चलता है। कहानी में प्रयुक्त ऐसे संवादों से कहानी का स्वाभाविक विकास होता चला गया है। अतः इस कहानी का एक अति महत्वपूर्ण पक्ष है– इसकी संवाद–योजना, जो कहीं से कृत्रिम नहीं लगती और स्वाभाविक वातावरण का निर्माण करती है। संवाद पात्राानुकूल है। उनमें चुटीलापन है, भावानुकूलता है सहजता है, और स्वाभाविकता है।

4 देशकाल और वातावरण

इस कहानी में जितनी भी घटनाएँ है, वे अवध की हैं। अवध राज्य का वातावरण इसमें अभिव्यक्त हुआ है। कहानी में जिस समय का वर्णन है, वह 1857 के आस–पास का है। आप जानते ही हैं कि भारतीय इतिहास में 1857 का क्या महत्त्व है। सन् 1857 में हमारा पहला स्वाधीनता–आंदोलन हुआ था। यह आंदोलन सपफल न हो पाया और भारत अंग्रेजों का पूरी तरह से गुलाम हो गया। इस कहानी में भारत के राज्यों में से एक अवध के पतन की प्रक्रिया का चित्राण है। कहानी के आरंभ में ही कहानी के मूल उद्देश्य के अनुसार वातावरण निर्मित किया गया है। लेखक ने स्पष्ट रूप से कहानी के देशकाल का उल्लेख किया है– ''वाजिद अली शाह का समय था। लखनउफ विलासिता के रंग में डूबा हुआ था।'' यहाँ पर लखनउफ से तात्पर्य लखनउफ की समस्त जनता और शासकों से है। लेखक ने लिखा है कि अमीर और गरीब सभी किसी–न–किसी लत तथा विलासिता में डूबे थे। जीवन का कोई भी क्षेत्रा इससे छूटा न था। सभी एक–दूसरे से निरपेक्ष थे। संसार में क्या हो रहा है। इसे

जानने में किसी की दिलचस्पी न थी। पफकीरों को पैसे मिलते, तो वे भी रोटियाँ न लेकर अपफीम खाते या शराब पीते। क्या आप जानते हैं कि ऐसी स्थिति कब होती है? जी हाँ, जब शासक–वर्ग के लोग पूरी तरह से निकम्मे हो जाएँ और विलास में डूब जाएँ।

नवाब वाजिदअली शाह के बारे में मीर रोशन अली कहते हैं, ''शहर में कुछ न हो रहा होगा। लोग खाना खा–खाकर आराम से सा रहे होंगे। हजूर साहब भी ऐशगाह में होंगे।'' यह वह वातावरण है जिसमें न नवाबों को जनता की चिंता है, न पराजय कीऋ न जनता को किसी की चिंता है। सब एक–दूसरे से अलग, टूटे हैं।

5 भाषा–शैली

इसमें अरबी–पफारसी के शब्दों का प्रवाहमय प्रयोग किया गया है, साथ ही तत्सम और तद्भव शब्दों का भी इस्तेमाल हैं। कहीं–कहीं अंग्रेज़ी के शब्द भी हैं। इस कहानी में हिन्दी भाषा का एक भिन्न रूप है, जिसे –हिंदुस्तानी' कहा जाता है। 'हिंदुस्तानी' भाषा का वह रूप है जो हिंदी और अरबी–फारसी के लोक प्रचलित, सरल शब्दों के आधर पर बनी है। इसके साथ ही भाषा का यह रूप भारत की मिली–जुली संस्कृति को भी अभिव्यक्त करता है

इससे कहानी में सजीवता एवं रोचकता का समावेश होता है तथा कहीं से बनावटीपन या कृत्रिमता नहीं झलकती है। इस कहानी की भाषा पात्रानुकूल और भावानुकूल है अर्थात् पात्रां के व्यक्तित्व और उनके भावों के अनुकूल है। सभी पात्रों के संवादों से उनके व्यक्तित्व एवं उनकी सोच के बारे में पता चलता है। लखनउफ में जब वाजिदअली शाह को कैद कर लिया जाता है और मिरज़ा साहब जब यह बात मीर साहब को बताते हैं तो उनका यह कथन कि पहले अपन बादशाह को बचाइए फिर नवाब साहब का मातम कीजिएगा।

.6 उद्देश्य

जिस प्रकार मैदान में बचाव और आक्रमण का महत्व होता है, वैसे ही शतरंज के खेल में भी। प्रेमचंद इस कहानी के माध्यम से यह कहना चाहते हैं कि मिरज़ा और मीर जैसे लोग यदि अपना दिमाग देश के बचाव में लगाते तो गुलामी से बचा जा सकता था। स्वाधीनता–आंदोलन के समय की अनेक रचनाओं में इतिहास से सबक लेने की बात कही जा रही थी। प्रेमचंद ने इस कहानी में भी स्वाधीनता–आंदोलन में लगे नेताओं और शतरंज के खिलाड़ी उनके पीछे चलने वाली जनता को यह सीख दी कि देश और स्वाधीनता के हित में हमें आराम तथा विलास को छोड़ देना चाहिए और अपनी ज़िम्मेदारियों को निभाना चाहिए। लेकिन 'शतरंज के खिलाड़ी' के दोनों खिलाड़ी देश और समाज की उपेक्षा करके शतरंज में ही व्यस्त रहते हैं। वे अपनी बुरी आदतों के पक्ष में समाधन करते हुए कहते हैं कि शतरंज खेलने से बुि(तीक्ष्ण होती है। लेकिन उनकी तीक्ष्ण बुि(का कोई सामाजिक उपयोग कहानी में दिखा? नहीं न? स्पष्ट है कि किसी व्यक्ति का कोई भी पक्ष तब तक सकारात्मक नहीं बन पाता, जब तक कि उसका संबंध् समूह के हित से न हो। इस कहानी में शतरंज, मीर और मिरज़ा– ये सब अपने आप में महत्वपूर्ण नहीं बल्कि इनके माध्यम से कही गई बात महत्वपूर्ण है। वही प्रेमचंद का उद्देश्य भी है। प्रेमचंद देश को गुलामी से मुक्त देखना चाहते थे, इसलिए उन्होंने गुलाम बनाने

वाली स्थितियों का चित्राण करके पाठकों को आगाह किया है। इसके साथ–साथ यह भी बताया है कि मानसिक प्रवृत्तियों का भी संक्रमण होता है, अर्थात् एक वर्ग की बुरी आदतें, दूसरे वर्ग तक पहुँचती है। कहानी में नवाब, मीर, मिरज़ा सब निष्क्रिय, विलासी और सुख–सुविधओं में डूबे हैं। वे संघर्ष करने से बचते हैं। इन बातों का असर जनता पर भी पड़ता है। इसलिए समाज का प्रत्येक व्यक्ति एक–दूसरे से टूटा, व्यक्तिगत राग–रंग में डूबा है। इसका परिणाम यह होता है कि न तो देश बचता है, न ही व्यक्ति। नवाब बंदी हो गए और मीर और मिरज़ा व्यक्तिगत झूठी शान के कारण एक–दूसरे की हत्या कर देते हैं।

संधि की परिभाषा व उसके प्रकार (Sandhi Ki Paribhasha V Uske Prakar) :

हिंदी में संधि की अत्यधिक महत्ता है

संधि की परिभाषा (Sandhi Ki Paribhasha) :

दो वर्णों के मेल को संधि कहते है।
संधि के उदाहरण :

1. देव + आलय = देवालय
2. जगत् + नाथ = जगन्नाथ
3. मनः + योग = मनोयोग

संधि तीन प्रकार की होती हैं:

1. स्वर संधि
2. व्यंजन संधि
3. विसर्ग संधि

स्वर संधि :

दो स्वरों के मेल से जो विकार उत्पन्न होता है उसे स्वर-संधि कहते है|

उदाहरण –
सूर्य + अस्त = सूर्यास्त
महा + आत्मा = महात्मा
हिम + आलय = हिमालय
स्वर संधि के पाँच भेद होते हैं :

1. दीर्घ संधि
2. गुण संधि
3. वृद्धि संधि
4. यण संधि
5. अयादि संधि

1. दीर्घ-संधि :

ह्रस्व या दीर्घ 'अ', 'इ', 'उ', के पश्चात क्रमशः ह्रस्व या दीर्घ 'अ', 'इ', 'उ' स्वर आएँ तो दोनों को मिलाकर दीर्घ 'आ', 'ई', 'ऊ' हो जाते हैं|

उदाहरण –

अ + अ = आ	धर्म + अर्थ = धर्मार्थ
अ+ आ = आ	देव +आलय = देवालय
आ+ अ = आ	परीक्षा + अथी = परीक्षार्थी
आ+ आ = आ	महा + आत्मा = महात्मा
इ + इ = ई	अति + इव = अतीव
इ+ई =ई	गिरि + ईश = गिरीश
ई+इ = ई	मही + इंद्र= महींद्र
ई+ई = ई	रजनी + ईश = रजनीश
उ +उ = ऊ	भानु + उदय = भानुदय
उ+ ऊ = ऊ	लघु + ऊर्मि =लाघुर्मी

ऊ+उ = ऊ वधू + उत्सव = वधूत्सव
ऊ + ऊ = ऊ सरयू + ऊर्मि = सरयूर्मि

2. गुण-संधि :

यदि 'अ' और 'आ' के बाद 'इ' या 'ई', उ या 'ऊ' और 'ऋ' स्वर आए तो दोनों के मिलने से क्रमशः 'ए', 'ओ' और 'अर्' हो जाते हैं|

उदाहरण –

अ + इ = ए नर + इंद्र = नरेंद्र
अ + ई = ए नर + ईश = नरेश
आ + इ = ए रमा + इंद्र = रमेंद्र
आ + ई = ए महा + ईश = महेश
अ+ उ = ओ वीर + उचित = वीरोचित
अ+ ऊ = ओ सूर्य + ऊर्जा = सूर्योर्जा
आ + उ = ओ महा + उदय – महोदय
आ+ ऊ =ओ दया + ऊर्मि = दयोर्मि
अ + ऋ = अर् देव + ऋषि = देवर्षि
आ + ऋ = अर् महा + ऋषि = महर्षि

3. वृद्धि-संधि :

'अ' या 'आ' के बाद 'ए' या 'ऐ' आ। तो दोनों के मेल से 'ऐ' हो जाता है तथा 'अ' और 'आ' ६ पश्चात 'ओ' या 'औ' आए तो दोनों के मेल से 'औ' हो जा है|

उदाहरण –

अ+ ए = ऐ एक + एक = एकैक
अ+ऐ = ऐ मत + ऐक्य = मतैक्य
आ + ए = ऐ सदा + एव = सदैव
आ + ऐ = ऐ महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्य
अ+ओ=औ वन + ओषधि – वनौषधि

अ+ औ = औ	परम + औदार्य = परमौदार्य
आ+ ओ= औ	महा + ओजस्वी = महौजस्वी
आ+ औ= औ	महा + औषध = महौषध

4. यण-संधि :

यदि 'इ', 'ई', 'उ', 'ऊ' और 'ऋ' के बाद भिन्न स्वर आए तो 'इ' और 'ई' का 'य', 'उ' और 'ऊ' का 'व' तथा 'ऋ' का 'र' हो जाता है|

उदाहरण –

इ+ अ = य	अति + अधिक = अत्यधिक
इ+ ए = ये	प्रति + एक = प्रत्येक
ई+ आ = या	देवी + आगमन = देव्यागमन
ई+ ऐ = यै	सखी + ऐश्वर्य = सख्यैश्वर्य
उ+ अ = व	सु + अच्छ = स्वच्छ
उ+ आ=वा	सु + आगत= स्वागत
ऊ+ आ = वा	वधू + आगमन = वध्वागमन
ऋ+ अ = र	पितृ + अनुमति = पित्रनुमति
ऋ + आ = रा	मातृ + आज्ञा = मात्राज्ञा

5. अयादि-संधि :

यदि 'ए', 'ऐ', 'ओ', 'औ' स्वरों का मेल दूसरे स्वरों से हो तो 'ए' का 'अय', 'ऐ' का 'आय', 'ओ' का 'अव' तथा 'औ' का 'आव' के रूप में परिवर्तन हो जाता है।

उदाहरण –

ए+ अ = अय	ने + अन = नयन
ऐ+ अ = आय	नै + अक = नायक
ऐ + इ = आयि	नै + इका = नायिका
ओ+ अ = अव	पो + अन = पवन
ओ+ इ = अवि	पो + इत्र = पवित्र

ओ+ई = अवी गो + ईश = गवीश
औ+ अ = आव पौ + अन = पावन
औ+इ = आवि नौ + इक = नाविक
औ + उ = आवु भौ + उक = भावुक

व्यंजन-संधि :

व्यंजन के बाद स्वर या व्यंजन आने से जो परिवर्तन होता है, उसे व्यंजन-संधि कहते हैं|
उदाहरण –
वाक् + ईश = वागीश (क् + ई = गी)
सत् + जन = सज्जन (त् + ज = ज्ज)
उत् + हार = उद्धार (त् + ह = द्ध)

व्यंजन-संधि के नियम :

वर्ग के पहले वर्ण का तीसरे वर्ण में परिवर्तन

किसी वर्ग के पहले वर्ण (क् च ट त् प्) का मेल किसी स्वर अथवा किसी वर्ग के तीसरे वर्ण (ग ज ड द ब) या चौथे वर्ण (घ झ ढ ध भ) अथवा अंतःस्थ व्यंजन (य र ल व) के किसी वर्ण से होने पर वर्ग का पहला वर्ण अपने ही वर्ग के तीसरे वर्ण (ग् ज् ड् द् ब) में परिवर्तित हो जाता है|
उदाहरण –
क् का ग् होना : दिक् + गज = दिग्गज
च का ज होना : अच् + अंत = अजंत
ट का ड होना : षट् + आनन = षडानन
त् का द होना: भगवत्+ भजन = भगवद्भजन
प् का ब होना : अप् + ज = अब्ज

वर्ग के पहले वर्ण का पाँचवें वर्ण में परिवर्तन

यदि किसी वर्ग के पहले वर्ण (क् च् ट् त् प्) का मेल किसी अनुनासिक वर्ण (वस्तुतः केवल न म) से हो तो उसके स्थान पर उसी वर्ग का पाँचवाँ वर्ण (ङ् ञ् ण न म्) हो जाता है|

उदाहरण –

क् का ङ् होना : वाक् + मय = वाङ्मय

ट् का ण् होना : षट् + मुख = षण्मुख

त् का न होना : उत् + मत्त = उन्मत्त

'छ' संबंधी नियम

किसी भी ह्रस्व स्वर या 'आ' का मेल 'छ' से होने पर 'छ' से पहले 'च' जोड़ दिया जाता है|

उदाहरण –

स्व + छंद = स्वच्छंद

परि + छेद = परिच्छेद

अनु + छेद = अनुच्छेद

वि + छेद = विच्छेद

त् संबंधी नियम

(i) 'त्' के बाद यदि 'च', 'छ' हो तो 'त्' का 'च्' हो जाता है|

उदाहरण –

उत् + चारण = उच्चारण

उत् + चरित = उच्चरित

जगत् + छाया = जगच्छाया

सत् + चरित्र = सच्चरित्र

(ii) 'त्' के बाद यदि 'ज', 'झ' हो ता त् 'ज' में बदल जाता है।

उदाहरण –

सत् + जन – सज्जन

विपत् + जाल = विपज्जाल

उत् +ज्ज्वल = उज्ज्वल

उत् + झटिका = उज्झटिका

(iii) 'त्' के बाद यदि 'ट', 'ड' हो तो 'त्', क्रमशः 'ट्' 'ड में बदल जाता है|

उदाहरण –

बृहत् + टीका = बृहट्टीका

उत् + डयन = उड्डयन

(iv) 'त्' के बाद यदि 'ल' हो तो 'त्', 'ल' में बदल जाता है|

उदाहरण –

उत् + लास = उल्लास

उत् + लेख = उल्लेख

(v) 'त्' के बाद यदि 'श्' हो तो 'त्' का 'च' और 'श्' का "छ' हो जाता है|

उदाहरण –

उत् + श्वास = उच्छ्वास

सत् + शास्त्र = सच्छास्त्र

(vi) 'त्' के बाद यदि 'ह' हो तो 'त्' के स्थान पर 'द्' और 'ह' के स्थान पर 'ध' हो जाता है|

उदाहरण –

तत् + हित = तद्धित

उत् + हत – उद्धत

5. 'न' संबंधी नियम:

यदि 'ऋ', 'र', 'ष' के बाद 'न' व्यंजन आता है तो 'न' का 'ण' हो जाता है|

उदाहरण –

परि + नाम = परिणाम

प्र + मान = प्रमाण

राम + अयन = रामायण

भूष + अन = भूषण

6. 'म' संबंधी नियम :

(i) 'म्' का मेल 'क' से 'म' तक के किसी भी व्यंजन वर्ग से होने पर 'म्' उसी वर्ग के पंचमाक्षर (अनुस्वार) में बदल जाता है|

उदाहरण –

सम् + कलन = संकलन

सम् + गति = संगति

परम् + तु = परंतु

सम् + चय = संचय

सम् + पूर्ण = संपूर्ण

(ii) 'म्' का मेल यदि 'य', 'र', 'ल', 'व', 'श', 'ष', 'स', 'ह' से हो तो 'म्' सदैव अनुस्वार ही होता है|

उदाहरण –

सम् + योग = संयोग

सम् + रक्षक = संरक्षक

(iii) 'म्' के बाद 'म' आने पर कोई परिवर्तन नहीं होता है|

उदाहरण –

सम् + मान = सम्मान

सम् + मति = सम्मति

7. स संबंधी नियम :

'स' से पहले 'अ', 'आ' से भिन्न स्वर हो तो 'स' का 'ष' हो जाता है|

उदाहरण –

वि + सम = विषम

वि + साद = विषाद

सु + समा = सुषमा

विसर्ग-संधि :

विसर्ग के पश्चात स्वर या व्यंजन आने पर विसर्ग में जो विकार उत्पन्न होता है, उसे हम विसर्ग संधि कहते हैं|

उदाहरण –

निः + आहार = निराहार

दुः + आशा = दुराशा

तपः + भूमि = तपोभूमि

मनः + योग = मनोयोग

अंतः + गत = अंतर्गत

अंतः + ध्यान = अंतर्ध्यान

मातृभूमि -मैथिलीशरण गुप्त

नीलांबर परिधान हरित तट पर सुन्दर है।
सूर्य-चन्द्र युग मुकुट, मेखला रत्नाकर है॥
नदियाँ प्रेम प्रवाह, फूल तारे मंडन हैं।
बंदीजन खग-वृन्द, शेषफन सिंहासन है॥

करते अभिषेक पयोद हैं, बलिहारी इस वेष की।
हे मातृभूमि! तू सत्य ही, सगुण मूर्ति सर्वेश की॥

जिसके रज में लोट-लोट कर बड़े हुये हैं।
घुटनों के बल सरक-सरक कर खड़े हुये हैं॥
परमहंस सम बाल्यकाल में सब सुख पाये।

जिसके कारण धूल भरे हीरे कहलाये॥

हम खेले-कूदे हर्षयुत, जिसकी प्यारी गोद में।
हे मातृभूमि! तुझको निरख, मग्न क्यों न हों मोद में?

पा कर तुझसे सभी सुखों को हमने भोगा।
तेरा प्रत्युपकार कभी क्या हमसे होगा?
तेरी ही यह देह, तुझी से बनी हुई है।
बस तेरे ही सुरस-सार से सनी हुई है॥

फिर अन्त समय तू ही इसे अचल देख अपनायेगी।
हे मातृभूमि! यह अन्त में तुझमें ही मिल जायेगी॥

निर्मल तेरा नीर अमृत के से उत्तम है।
शीतल मंद सुगंध पवन हर लेता श्रम है॥
षट्ऋतुओं का विविध दृश्ययुत अद्भुत क्रम है।
हरियाली का फर्श नहीं मखमल से कम है॥

शुचि-सुधा सींचता रात में, तुझ पर चन्द्रप्रकाश है।
हे मातृभूमि! दिन में तरणि, करता तम का नाश है॥

सुरभित, सुन्दर, सुखद, सुमन तुझ पर खिलते हैं।
भाँति-भाँति के सरस, सुधोपम फल मिलते है॥
औषधियाँ हैं प्राप्त एक से एक निराली।
खानें शोभित कहीं धातु वर रत्नों वाली॥

जो आवश्यक होते हमें, मिलते सभी पदार्थ हैं।
हे मातृभूमि! वसुधा, धरा, तेरे नाम यथार्थ हैं॥

क्षमामयी, तू दयामयी है, क्षेममयी है।
सुधामयी, वात्सल्यमयी, तू प्रेममयी है॥
विभवशालिनी, विश्वपालिनी, दुःखहर्त्री है।
भय निवारिणी, शान्तिकारिणी, सुखकर्त्री है॥

हे शरणदायिनी देवि, तू करती सब का त्राण है।
हे मातृभूमि! सन्तान हम, तू जननी, तू प्राण है॥

जिस पृथ्वी में मिले हमारे पूर्वज प्यारे।
उससे हे भगवान! कभी हम रहें न न्यारे॥
लोट-लोट कर वहीं हृदय को शान्त करेंगे।
उसमें मिलते समय मृत्यु से नहीं डरेंगे॥

उस मातृभूमि की धूल में, जब पूरे सन जायेंगे।
होकर भव-बन्धन- मुक्त हम, आत्म रूप बन जायेंगे॥

मैथिलीशरण गुप्त

राष्ट्रकवि **मैथिलीशरण गुप्त** (३ अगस्त १८८६ – १२ दिसम्बर १९६४) हिन्दी के प्रसिद्ध कवि थे। हिन्दी साहित्य के इतिहास में वे खड़ी बोली के प्रथम महत्त्वपूर्ण कवि हैं।[1] उन्हें साहित्य जगत में 'दद्दा' नाम से सम्बोधित किया जाता था। उनकी कृति भारत-भारती (1912) भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के समय में काफी प्रभावशाली सिद्ध हुई थी और और इसी कारण महात्मा गांधी ने उन्हें 'राष्ट्रकवि' की पदवी भी दी थी उनकी जयन्ती ३ अगस्त को हर वर्ष 'कवि दिवस' के रूप में मनाया जाता है। सन १९५४ में भारत सरकार ने उन्हें पद्मभूषण से सम्मानित किया।[4]

महावीर प्रसाद द्विवेदी जी की प्रेरणा से गुप्त जी ने खड़ी बोली को अपनी रचनाओं का माध्यम बनाया और अपनी कविता के द्वारा खड़ी बोली को एक काव्य-भाषा के रूप में निर्मित करने में अथक प्रयास किया। इस तरह ब्रजभाषा जैसी समृद्ध काव्य-भाषा को छोड़कर समय और संदर्भों के अनुकूल होने के कारण नये कवियों ने इसे ही अपनी काव्य-अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया। हिन्दी कविता के इतिहास में यह गुप्त जी का सबसे बड़ा योगदान है। घासीराम व्यास जी उनके

मित्र थे। पवित्रता, नैतिकता और परंपरागत मानवीय सम्बन्धों की रक्षा गुप्त जी के काव्य के प्रथम गुण हैं, जो 'पंचवटी' से लेकर 'जयद्रथ वध', 'यशोधरा' और 'साकेत' तक में प्रतिष्ठित एवं प्रतिफलित हुए हैं। 'साकेत' उनकी रचना का सर्वोच्च शिखर है।

काव्यगत विशेषताएँ

- (१) राष्ट्रीयता और गांधीवाद की प्रधानता
- (२) गौरवमय अतीत के इतिहास और भारतीय संस्कृति की महत्ता
- (३) पारिवारिक जीवन को भी यथोचित महत्ता
- (४) नारी मात्र को विशेष महत्व
- (५) प्रबन्ध और मुक्तक दोनों में लेखन
- (६) शब्द शक्तियों तथा अलंकारों के सक्षम प्रयोग के साथ मुहावरों का भी प्रयोग
- (७) पतिवियुक्ता नारी का वर्णन

राष्ट्रीयता तथा गांधीवाद

मैथिलीशरण गुप्त के जीवन में राष्ट्रीयता के भाव कूट-कूट कर भर गए थे। इसी कारण उनकी सभी रचनाएं राष्ट्रीय विचारधारा से ओत प्रोत है। वे भारतीय संस्कृति एवं इतिहास के परम भक्त थे। परन्तु अन्धविश्वासों और थोथे आदर्शों में उनका विश्वास नहीं था। वे भारतीय संस्कृति की नवीनतम रूप की कामना करते थे।

गुप्त जी के काव्य में राष्ट्रीयता और गांधीवाद की प्रधानता है। इसमें भारत के गौरवमय अतीत के इतिहास और भारतीय संस्कृति की महत्ता का ओजपूर्ण प्रतिपादन है। आपने अपने काव्य में पारिवारिक जीवन को भी यथोचित महत्ता प्रदान की है और नारी मात्र को विशेष महत्व प्रदान किया है। गुप्त जी ने प्रबंध काव्य तथा मुक्तक काव्य दोनों की रचना की। शब्द शक्तियों तथा अलंकारों के सक्षम प्रयोग के साथ मुहावरों का भी प्रयोग किया है।

गौरवमय अतीत के इतिहास और भारतीय संस्कृति की महत्ता

एक समुन्नत, सुगठित और सशक्त राष्ट्रीय नैतिकता से युक्त आदर्श समाज, मर्यादित एवं स्नेहसिक्त परिवार और उदात्त चरित्र वाले नर-नारी के निर्माण की दिशा में उन्होंने प्राचीन

आख्यानों को अपने काव्य का वर्ण्य विषय बनाकर उनके सभी पात्रों को एक नया अभिप्राय दिया है। जयद्रथवध, साकेत, पंचवटी, सैरन्ध्री, बक संहार, यशोधरा, द्वापर, नहुष, जयभारत, हिडिम्बा, विष्णुप्रिया एवं रत्नावली आदि रचनाएं इसके उदाहरण हैं।

दार्शनिकता

दर्शन की जिज्ञासा आध्यात्मिक चिन्तन से अभिन्न होकर भी भिन्न है । मननशील आर्यसुधियों की यह एक विशिष्ट चिन्तन प्रक्रिया है और उनके तर्कपूर्ण सिद्धान्त ही दर्शन है। इस प्रकार आध्यात्मिकता यदि सामान्य चिन्तन है तो षडदर्शन ब्रह्म जीव, जगत आदि का विशिष्ट चिन्तन । अतः दार्शनिक चिन्तन भी तीन मुख्य दिशाएँ हैं - ब्रह्म - जीव - जगत

रहस्यात्मकता एवं आध्यात्मिकता

गुप्त जी के परिवार में वैष्णव भक्ति भाव प्रबल था। प्रतिदिन पूजा-पाठ, भजन, गीता पढ़ना आदि सब होता था। यही कारण है कि गुप्त जी के जीवन में भी यह आध्यात्मिक संस्कार बीज के रूप में पड़े हुए थे जो धीरे-धीरे अंकुरित होकर रामभक्ति के रूप में वटवृक्ष हो गया।

नारी मात्र की महत्ता का प्रतिपादन

नारियों की दुरवस्था तथा दुःखियों दीनों और असहायों की पीड़ा ने उसके हृदय में करुणा के भाव भर दिये थे। यही कारण है कि उनके अनेक काव्य ग्रंथों में नारियों की पुनर्प्रतिष्ठा एवं पीड़ित के प्रति सहानुभूति झलकती है। नारियों की दशा को व्यक्त करती उनकी ये पंक्तियां पाठकों के हृदय में करुणा उत्पन्न करती है-

अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी। आँचल में है दूध और आँखों में पानी॥

भाषा शैली

मैथिलीशरण गुप्त की काव्य **भाषा** खड़ी बोली है। इस पर उनका पूर्ण अधिकार है। भावों को अभिव्यक्त करने के लिए गुप्त जी के पास अत्यन्त व्यापक शब्दावली है।

'मातृभूमि' कविता का सारांश प्रस्तुत कीजिए। अथवा मैथिलीशरण गुप्त की कविता 'मातृभूमि' पर अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने मातृभूमि में अपनी मातृभूमि की महत्ता एवं उसके प्रति अपने प्रगाढ़ प्रेम का ऋणस्वीकारी-भाव चित्रण किया है। 'शेवफन-सिंहासन' पर बैठे हुए अपनी मातृभूमि कवि को 'सर्वेश की सगुण मूर्ति लगती है, वह इस पर बलि बलि जाता है— बलिहारी जाता है जो पृथ्वी पर पैदा होते ही नवजात को सहारा देती हैं, ममतापूर्वक अपनी गोद में लेकर उसकी रक्षा करती है और जो अपनी जननी की भी पालनहार है, उस मातृभूमि पृथ्वी से यह पूज्यभाव से 'मातामही' के रूप में अपना अटूट रिश्ता जोड़ता है।

renaissance